दृष्टि The Vision

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

(प्राचीन इतिहास)

8 Test

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–H1

Name: NAVEEN GAHLAWAT **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): HINDI **Reg. Number:** FP/July-19/760

Center & Date: Mukherji Nagar **UPSC Roll No. *(If allotted)*:** 3583453

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS and printed both in HINDI & ENGLISH.
Candidate has to attempt FIVE questions in all.
Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE from each section.
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xix) एक प्राचीन विश्वविद्यालय

An ancient university

(xx) एक प्रसिद्ध सूर्य मंदिर

A famous Sun temple

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2. (a) पुरातात्त्विक प्रमाण भारतीय इतिहास के ज्ञान के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं, जिनसे भारत के अंधकार युगों पर प्रकाश पड़ता है। विश्लेषण कीजिये। 20

Archaeological evidences are important source of knowledge of Indian history, as they help unravel the undocument periods. Analyse. 20

इतिहास की जानकारी हमें दो साक्ष्यों से पता चलती है — पुरातात्विक तथा साहित्यक

पुरातात्विक स्रोत

- शिलालेख
- सिक्के
- स्मारक
- मृदभांड
- अस्थियां

[पुरातात्वीय प्रमाण साहित्य से कहीं अधिक इतिहास का पुनर्निर्माण करते हैं]

पुरातात्विक साक्ष्यों का हम पाषाण काल से ही देखते हैं जिसमें औजारों के प्रयोग के साक्ष्य, खेती करने, नवपाषाण में स्थायी ग्रामों के प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ही जानकारी मिलती है।

वही सिंधु घाटी का पूर्ण ज्ञान ही हमें पुरातत्व से मिलता है क्योंकि उसकी लिपी को अभी तक पढ़ा नहीं जा चुका है। जैसे - हल, नगर योजना, रथों का प्रयोग, मुहरों का प्रयोग, धार्मिक अनुष्ठान इत्यादि

वैदिकोत्तर काल व उत्तर वैदिक काल से ग्रामाणों के कलात्मक प्रमाण, लोहे से कृषि के प्रमाण, हलके पार कुओं से सिंचाई व्यवस्था तथा सिक्कों से व्यापार के प्रमाण मिलते है।

मौर्य काल मे तो पुरातत्व के बिना पता लगाना असंभव सा प्रतीत होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शिलालेखों से धम्म, साम्राज्य की सीमा, वेतन प्रणाली, युद्ध व कला, व धर्म निरपेक्षता का पता चलता है। वहीं पूर्वी भारत में खारवेल के शासन का पता हाथीगुम्फा अभिलेख से, अयोध्या अभिलेख से पुष्यमित्र शुंग, ऐहोल अभिलेख से सती प्रथा आदि की जानकारी मिलती है।

अतः अशोककालीन इतिहास के पुरातात्विक साहित्य उजाला भर दिया देते है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) प्राचीन भारत के धार्मिक साहित्यों का मुख्य उद्देश्य जहाँ एक तरफ अपने धर्म के सिद्धांतों पर उपदेश देना था वहीं दूसरी तरफ धर्मेत्तर साहित्य प्राचीन काल की राजनीतिक गतिविधियों को विश्लेषित करते हैं। चर्चा कीजिये। 15

While religious literature of ancient India preached the religion principles the secular literature depicted the political activities of ancient times. Discuss. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इतिहास का पुर्ननिर्माण मुख्यतः दो आधार पर किया जाता है – साहित्य और पुरातात्विक साहित्य साक्ष्यो मे भी दो भागो को लिया गया है [धार्मिक साहित्य और धर्मेत्तर साहित्य]

धार्मिक साहित्य मे – ब्राह्मण धर्म का साहित्य – रामायण, महाभारत, उपनिषद, पुराण, धर्म सूत्र व स्मृति साहित्य, वेद।

जैन धर्म मे अंग और 12 उपांग मे है

वही बौद्ध धर्म मे तीनो पीटकों

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से हमें धार्मिक जानकारी मिलती है।

इनके धर्म ग्रन्थ, सामाजिक मंदिरों देवी-देवता, लौकिक अलौकिक जानकारी मिलती है इसी प्रकार पीटकों में भी धर्म से जुड़े नियमों का उल्लेख किया गया है।

वहीं धर्मेत्तर साहित्य में, अर्थशास्त्र, इंडिका, कल्हण की राजतरंगिणी, विशाखदत्त की मुद्राराक्षस, कालीदास की मालविकाग्निमित्रं आदि।

इनमें प्राचीन भारत की आर्थिक दशा, राजनीतिक सामाजिक दशा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मालविकाग्निमित्र से शुंग वंश की जानकारी तो राजतरंगिणी से कश्मीर का इतिहास अशोक से मध्य काल तक प्राप्त होता है।

मुद्राराक्षस में हमें नंदों पर चन्द्रगुप्त की विजय का पता चलता है तो अर्थशास्त्र राज्य का स्वरूप, समाज, अर्थव्यवस्था पर प्रकाश डालती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(c) मुद्राएँ तत्कालीन आर्थिक दशा तथा साम्राज्यों के सीमा निर्धारण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। टिप्पणी कीजिये। 15

Coins are important for determining the economic condition and frontier of empires. Comment. 15

इतिहास में आर्थिक दशा व सीमा निर्धारण दोनो ही की जानकारी देने में सिक्को का महत्वपूर्ण स्थान है।

IVC से ही मुद्रो का प्रयोग से व्यापार की समृद्धि का पता चलता है।

वही वैदिकोत्तर काल में भारी मात्रा में मिले आहत सिक्के मिले है जो उस काल की व्यापार व अर्थव्यवस्था को प्रकाश में लाते है।

मौर्य काल में सिक्को से अर्थव्यवस्था व सीमा निर्धारण दोनो का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पता चलता है। मुद्रा के प्रयोग बढ़ने से ही अर्थव्यवस्था का एकीकरण हो पाया।

मौर्योत्तर काल में कुषाण मुद्रा मध्य एशिया व अफगानिस्तान तक मिली है जिनसे इनके सीमा का पता चलता है तथा व्यापार की दृष्टि से तो यह काल आर्थिक क्रियाओं की पराकाष्ठा पर था ही।

सातवाहन काल में मुद्रा में सीसा प्राप्त होती है क्योंकि शकों से उनके संघर्ष के कारण एवं उनमें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के सिक्कों पर छपा मारकर मुद्रा प्रयोग किया जाता था।

सातवाहन शासकों के सिक्कों पर जहाज के प्रतीक पाए जो व्यापारिक समृद्धि की ओर संकेत करते हैं।

वहीं गुप्त काल में कौड़ियों के प्रयोग व सिक्कों की घटती मात्रा अर्थव्यवस्था व व्यापार के पतन की ओर संकेत देती दिखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

खण्ड - ख / SECTION - B

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: 10 × 5 = 50

Answer the following in about 150 words each:

(a) प्राचीन काल में आमजन के बीच धर्मनिरपेक्ष ज्ञान प्रसारित करने में पुराणों के योगदान का मूल्यांकन कीजिये।

Evaluate the contribution of Puranas in spreading secular knowledge among the people in ancient times.

पुराण प्राचीन इतिहास को जानने का अहम हिस्सा है। इतिहास मे क्रमिक परिवर्तन होता है। जो पुराणो मे भलि-भाँति दिखता है। अधिकतर पुराण गुप्त काल के बाद के हैं वहीं भागवत पुराण 9वीं सदी का है। इन्हें दो श्रेणियों मे बाँटा जा सकता है - 18 महा पुराण व 18 उपपुराण हालांकि इनमे अलौकिक ज्ञान व पुनर्जन्म आदि का उल्लेख भी किया है किंतु इनमे हमें ~~ज्ञान~~ धर्मनिरपेक्ष के ज्ञान का प्रसार जैसे राजनीतिक, सामाजिक आदि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पुराणों में विभिन्न राजवंशों की वंशावली भी मिलती है।

जैसे – विष्णु पुराण – मौर्य वंश
वायु पुराण – ~~[illegible]~~ गुप्त
मत्स्य पुराण – सातवाहन

इनमें – सामाजिक रीति रिवाज, समारोह त्यौहार, जातियों के कर्तव्य, मंदिर निर्माण का विस्तृत विवरण, दान-दक्षिणा तीर्थयात्रा आदि की जानकारी मिलती है।

पुराणों में लोक परम्परा का समावेश दिखता है जो सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन से जुड़ा है।

इनमें समाज की स्थिति का वर्णन भी मिलता है।

गुप्तोत्तर काल से पहले शूद्रों व महिलाओं को पुराण पढ़ने की अनुमति नहीं थी। वेद पढ़ने तक का प्रतिषेध भी पुराणों में उल्लिखित होता है इसीलिए इन्हें जनता का ग्रंथ कहा जाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) गुप्तकालीन विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति को भूमिदान प्रथा के संदर्भ में विश्लेषित कीजिये।

Analyze the trend of decentralization during Gupta Period in the context of Bhudana practice.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गुप्तों में मौर्य की तरह केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति नहीं दिखती है। इसका एक कारण भूमिदान प्रथा को भी माना जाता है। इसकी शुरुआत 100 BC के सातवाहनों द्वारा की गई तथा गुप्तोत्तर व पूर्वमध्य काल में पराकाष्ठा दिखती है। गुप्त काल में भूमि दान अधिकार वंशानुगत कर दिए तथा सामंत सेना भी रखने की उन्हें ऊपर की ओर निष्ठा रखनी पड़ती थी।

विकेन्द्रीकरण के तत्वों की पुष्टि गुप्त उपाधियों से मिलती है जैसे — महाराजाधिराज

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परमेश्वर, आदि जिनसे पता चलता है कि अभिनत्व राजा हुआ करते थे।

हालाँकि सभी क्षेत्रों में भूमिदान नहीं किया जाता थी। साम्राज्य का केन्द्रीय क्षेत्र कुछ शासकों के अधीन था जो प्रांतों में बाँटा गया। इन प्रांतों को भुक्ति कहा जाता था वहीं भुक्ति को विषयों में बाँटा गया जिसका प्रधान विषयपति होता था।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) छठीं शताब्दी ई.पू. से चौथी शताब्दी ई.पू. तक सामाजिक व्यवस्था, विशेषकर स्त्रियों की दशा में आए परिवर्तनों को उल्लेखित करें।

Illustrate the changes in the social system, especially in the condition of women, during the 6thC BC to 4th C BC.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6ठीं सदी BC यानि वैदिकोत्तर काल में सामाजिक संरचना वैदिक काल की अपेक्षा अधिक जटिल प्रकार की थी

- वर्ण व्यवस्था जन्म आधारित हो गयी / पालि साहित्य में ब्राह्मणों को उच्च स्थान / क्षत्रिय को प्रथम स्थान
- सामाजिक विभेद व उच्च नीचता प्रबल हो गई
- दास प्रथा प्रचलित हुई -पालि साहित्यों में विभिन्न प्रकार के दासों का उल्लेख
- कानून वर्ण व जाति के आधार पर बनाए जाने लगे
- चंडाल व अन्य अस्पर्श जातियों का उल्लेख भी मिलता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्त्रियों की अवस्था पहले की अपेक्षा खराब हो गयी। जैसे कम उम्र में शादी। स्वतंत्रता पर पाबंदी, विवाह अभिभावकों की इच्छा से होता था।

धार्मिक समारोह में उनकी भूमिका कम हो गयी। महिलाओं से जुड़े कर्मकांडों में वैदिक मंत्रों का प्रयोग वर्जित हुआ।

इसी काल में वेश्यावृत्ति का उल्लेख भी मिलता है – नगर वधु आम्रपाली

• धर्मसूत्रों में भी स्त्री की स्थिति उच्च से अधीनस्थ बताई है। वहीं बुद्ध भी बौद्ध धर्म में पहले महिला प्रवेश वर्जित करते हैं किंतु बाद में प्रजापति गौतमी को धर्म में आने की आज्ञा देते हैं।

अतः वैदिकोत्तर कालीन समाज में स्त्री की स्थिति में गिरावट आनी शुरू हो गई थी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) हर्षवर्धन की महानता राजनीतिक-प्रशासनिक क्षेत्र में उसके उच्च आदर्शों के अंतर्गत दिखाई देती है। व्याख्या कीजिये।

The greatness of Harshavardhana evident in his high ideals in politico-administrative arena. Explain.

गुप्तोत्तर काल में उत्तर भारतीय राजनीति में हर्ष एक अनोखा आदर्शवादी चरित्र प्रस्तुत करता है इसकी जानकारी हमें हर्षचरित (बाणभट्ट) से मिलती है।

राजनीतिक -प्रशासनिक क्षेत्र में हर्ष के उच्च आदर्श

- अधिनस्थ राजाओं को भी उच्च पद दिया उन्हें गुप्तो की तरह अलग-थलग करने का प्रयास नही किया।
- विकेन्द्रीकरण की प्रवृति व स्थानीय हितों को विशेष महत्व दिया
- हर्ष की राज्यव्यवस्था उदार व आदर्शवादी सिद्धांतो पर थी
- वह पूर्ण राज्य का भ्रमण करता था और समस्याएँ भी देखता।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

- हर्ष की दिनचर्या का एक भाग राजनीतिक कार्यों और दो भाग धार्मिक व परोपकारी कार्यों हेतु था।

- उसने राज्य की आय को चार भागों में बाँटा
  - → राज्य का खर्च
  - → सार्वजनिक कार्य
  - → बुद्धिजीवियों का दान
  - → पंथों को दान

- हर्ष के राज्य में बल पूर्वक श्रम के सिद्धांत का उल्लेख नहीं मिलता।

- उसने रिकार्ड विभाग की स्थापना करवाई जिसमें अच्छे-बुरे कार्यों का वर्णन किया जाता था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) संगमकालीन दक्षिण भारत में वैदिक संस्कृति के स्वरूप पर चर्चा कीजिये।
Discuss the nature of Vedic culture in South India during the sangam age.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संगम युग दक्षिण भारतीय संस्कृति की पहली व्याख्या प्रस्तुत करता है यह काल आर्थिक व सांस्कृतिक दृष्टि से उत्तर से कहीं अधिक समृद्धि प्राप्त था।

निलकंठ नाथ शास्त्री का मानना है कि तमिल देश में वैदिक धर्म व आर्य सभ्यता का प्रसार हुआ था। इसकी पुष्टि निम्न बातों से होती है।

(A) तमिल वडुदेव वाही के मुरुगन उनका प्रमुख देवता था। कविताओं में उसका विशेष उल्लेख मिलता है।

(A) यहाँ भी शिव व मिनाक्षी की देव कथा प्रचलित थी रुद्र देवता की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पूजा के लिए कावेरी नदी के तट पर वार्षिक उत्सव होता था।

कालांतर में :

* अन्य देवी देवताओं की भी पूजा होने लगी। ब्रह्मा, विष्णु कृष्ण/
* पशु होने के साक्ष्य, व पशु बलि के साक्ष्य मिलते हैं।
* स्त्री व पुरुष तुलसी की पूजा करते थे या समृद्धि हेतु की जाती थी।

इस प्रकार संगम युग की सभ्यता व संस्कृति ने भारत की मिली जुली संस्कृति का विकास करने में अहम भूमिका का निर्वाह किया था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (a) "बौद्ध संघ एक संगठित एवं शक्तिशाली संस्था थी जिसे आधुनिक लोकतंत्र के विकास की प्रारंभिक अवस्था भी कहा जा सकता है।" टिप्पणी करें। 15

"The Buddhist Sangha was an organized and powerful institution, which can be regarded as the early stage of development of modern democracy." Comment. 15

सारनाथ के प्रथम उपदेश से बौद्ध संघ की शुरुआत मानी जाती है। जो पाँच शिष्यों से हुई और धीरे-धीरे इसमें महिला प्रवेश भी हो गया।

सदस्यता में वर्ण, जाति को आधार नहीं माना गया। हालांकि विशिष्ट दायित्व व अधीनता से जुड़े व्यक्तियों के लिए अनुमति आवश्यक थी – दास, सैनिक, ऋणी संघ में प्रवेश आयु 15 वर्ष थी।

संघ में प्रवेश की प्रक्रिया 'प्रवज्या' कहलाती थी इसमें विशिष्ट प्रकार का वस्त्र धारण करना पड़ता। अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, मानपान जैसी उस नियम शैली की आवश्यकता होती थी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विनय पिटक में संघ के 152 नियमों का उल्लेख मिलता है। भिक्षु अपनी योग्यता के आधार पर उच्च श्रेणी में प्रवेश करता था।

वर्षा ऋतु में उन्हें भ्रमण की आवश्यकता नहीं होती उन्हें मठों में ही रहना पड़ता यही प्रथा वास - वास कहलाती थी

* संघ में उपोसथ कार्यक्रम होता जिसमें भिक्षु अपनी गलतियों को स्वीकार करते थे

हालांकि मौर्योत्तर व उसके पश्चात संघ में दान अनुदान स्वीकारने से मठों में अनावश्यक धन संग्रह होने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लगा। भौतिकता वादी जीवन शैली का प्रसार इसी काल हुआ और भिक्षुओं ने बाहर प्रसार-प्रचार हेतु जाना बंद कर दिया यही कारण है कि कालांतर में बौद्ध धर्म मठों तक ही सीमित रह गया। अतः यह भी हो संघ के नियम आधुनिक लोकतांत्रिक प्रक्रिया को भलि-भाँति उल्लेख करते प्रतीत होते है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) यद्यपि मौर्योत्तर काल में उत्तर में कुषाण तथा दक्षिण में सातवाहनों ने एक बड़े क्षेत्र पर शासन किया तथापि वे मौर्यों की भाँति एक सुदृढ़ केंद्रीयकृत प्रशासनिक व्यवस्था का निर्माण न कर सके। चर्चा कीजिये। 20

Although, Kushanas in the north and Satavahanas in the south ruled over a large area in the Post-Mauryan period, they could not build a strong centralized administrative system like the Mauryas. Discuss. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मौर्य वंश के पतन तथा गुप्त उदय तक साम्राज्यों का विस्तार आपसी संघर्ष व विदेशी शक्तियों के आने से मानो ठहर सा गया था।

किंतु दो साम्राज्य अपनी प्रतिष्ठा बनाने में कामयाब हुए जिसमे उत्तर में कुषाण तथा दक्षिण में सातवाहन वंश का शासन था।

कनिष्क के काल में कुषाण साम्राज मध्य एशिया,

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अफगानिस्तान, उत्तर मे कश्मीर मे चीन को छुता था। वही सातवाहन साम्राज्य मध्य भारत से दक्षिण मे कृष्णा नदी तक फैला था। इसमे गौतमी पुत्र शातकर्णी ने प्रसार मे महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कुषाणों मे तो व्यापार दृष्टि अद्वितीय था वही सातवाहन कृषि क्षेत्र के साथ व्यापार मे भी समृद्धि प्राप्त थे

किंतु मौर्य की तरह केन्द्रीकरण का सर्वदा अभाव इस काल मे दिखता है, क्योंकि मौर्य साम्राज्य के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रशासन में अध्यक्षों की भूमिका तथा प्रान्तों के राजपरिवार के सदस्यों को ही लगाया जाता था

वहीं इनके

- भूमि दान प्रणाली के कारण विकेन्द्रण हुआ

- कृषकों ने दास व्यवस्था को चलाया

- अधिनस्थ राजाओं की सत्ता को स्वीकार किया मौर्य में यह तत्व अस्वीकार्य लगते थे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) "मौर्योत्तरकालीन मौद्रिक अर्थव्यवस्था इसके पूर्व की मुद्रा प्रणालियों का ही विकसित रूप थी।" टीका कीजिये। 15

"The Post-Mauryan monetary economy was a developed form of its earlier currency systems." Comment. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मौर्योत्तर के ~~समय~~ काल में अर्थव्यवस्था अपनी पराकाष्ठा पर थी जिसके प्रमुख कारण थे

* कृषि अधिशेष व उससे नगरीकरण को बल
* व्यापार व वाणिज्य को बढ़ावा
  - ↳ विदेशी व्यापार – रोमन साम्राज्य से
  - ↳ रेशम मार्ग
* शासकों द्वारा व्यापार को प्रोत्साहन
* मानसूनी मार्ग की खोज, जिससे दूरी व्यापार करना आसान हो गया।

सबसे बड़ी बात इस काल में मौद्रिक व्यवस्था

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी अपनी उच्च स्तर पर थी

पूर्व मे भी मौद्रीक अर्थव्यवस्था के साक्ष्य मिलते है।

सिक्को के साक्ष्य तो वैदिकोत्तर काल से ही मिलने शुरू हो चुके थे निष्क, शतमान आदि।

इसके बाद पंचमार्क सिक्को का प्रयोग व्यापक तौर पर था

वही मौर्य काल मे पण का उल्लेख वेतन के रूप मे मिलता है। अतः मौद्रीक प्रणाली तो पहले से चली आ रही थी किंतु

इस काल मे अनेक नवाचार मुद्रा प्रणाली मे प्र

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कुषाण साम्राज्य में सर्वप्रथम विम कडफीसस ने स्वर्ण सिक्कों को चलाया। इनमें तांबे के सिक्के भी व्यापक स्तर पर प्रचलित थे।

वहीं प्राचीन भारत में यही समय रोमन सिक्कों के व्यापक भण्डार का पता चलता है। जिसकी पुष्टि "प्लिनी के शोक" से होती है।

मध्य भारत क्षेत्र में राजों द्वारा स्वर्ण सिक्के व सातवाहनों द्वारा सीसे के सिक्कों के प्रचलन का पता चलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) प्राचीन भारत के कुछ शिक्षण संस्थान अपने दुखद अंत के बावजूद भारतीय संस्कृति और विरासत को सुरक्षित एवं समृद्धशाली बनाने में सहायक सिद्ध हुए। विवेचना कीजिये। 15

Some educational institutions of ancient India, despite their tragic end, proved to be helpful in making Indian culture and heritage safe and prosperous Discuss. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Drishti The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (a) ह्वेनसांग तथा फाह्यान के यात्रा विवरण सिर्फ धार्मिक स्थिति की जानकारी तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि तत्कालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दशाओं पर भी प्रकाश डालते हैं। स्पष्ट कीजिये। 15

The travelogues of Hiuen-Tsang and Fa-Hien are not limited to information on religious status but also highlight the political, social and economic conditions of India. Elucidate. 15

फाह्यान पहला चीनी यात्री था। वह चन्द्रगुप्त-II के काल मे भारत आया। वही हर्षवर्धन के काल में ह्वेनसांग आया।

ये दोनो बौद्ध धर्म के अध्ययन हेतु आये व ह्वेनसांग ने नालंदा विहार मे भी अध्ययन किया था।

इन्होंने भारत की धार्मिक स्थिति पर विस्तृत चर्चा की है।

जैसे - विदेशी यात्री को ब्राह्मणों का देश कहते थे

* बौद्ध धर्म में मठों का विशेष महत्व था

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किंतु इनकी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक जानकारी अधिक महत्वपूर्ण लगती है।

राजनीतिक — फायदा — • शुद्ध प्रशासन व्यवस्था
• कृषि हेतु राजकीय प्रोत्साहन
- अभियान, कानून की जानकारी

दुर्बलता — कृषि का प्रशासन, अन्य कार्य मशीनों आदि की जानकारी

आर्थिक जानकारी — फायदा — • मशीनों का प्रयोग
• कृषि की रक्षा
• व्यापार का पतन

दुर्बलता
↓
• व्यापार का पतन
• सामंतवादी प्रवृत्ति
• आम लोगों की दयनीय स्थिति आदि

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सामाजिक जानकारी

फायदा →
- बंगाल की उल्लेख
- धार्मिक स्वतंत्रता
- धर्मों का प्रचलन
  (वैष्णव, हिन्दू)
- शिक्षण संस्थानों की प्रान का उल्लेख
- उपयुक्त चिकित्सा आदि

दोष भाग –
- वैवाहिक प्रथाओं का उल्लेख
- सती प्रथा, बाल विवाह आदि का उल्लेख
- क्षेत्र विशेष के बारे में टिप्पणी
  - स्त्री, मनुष्य
  - धार्मिक, नैतिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) सातवीं सदी के आरंभ से ही कन्नौज भारत की राजनीति का केंद्रबिंदु बन गया जिसने त्रिपक्षीय संघर्ष की स्थिति पैदा की। कथन के संदर्भ में त्रिपक्षीय संघर्ष के कारणों तथा प्रभाव को बताएँ। 20

Kannauj became the focal point of Indian politics since the beginning of the seventh century which created the situation of tripartite struggle. In the context of the statement, discuss the causes and effect of the tripartite struggle. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हर्ष की मृत्यु के बाद कन्नौज मे शक्ति विघटन की स्थिति उत्पन्न हुई ।

- इस शून्यता को भरने हेतु पूर्व से पाल, मध्य भारत से प्रतिहार व दक्षिण से राष्ट्रकूटो ने प्रयास शुरू कर दिया।

इन्ही तीनो शक्तियों के संघर्ष को त्रिपक्षीय संघर्ष की संज्ञा दी जाती है।

इस संघर्ष का कारण

- कन्नौज की स्थिति →

कन्नौज

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

उत्तर भारत की केंद्री जगह पर था कि इस पर अधिकार होने से उत्तर भारत पर प्रभाव स्थापित हो सकता था।

(A) यह व्यापारिक मार्ग व गंगा घाटी पर प्रभाव स्थापित करने की अच्छी स्थिति प्रस्तुत करता था

(A) यह दोआब का उपजाऊ क्षेत्र था जिससे सम्पन्न प्राप्ति की जा सकती थी

(A) कन्नौज का विशेष धार्मिक व सामरिक महत्व भी था

लम्बे संघर्ष के बाद अंततः प्रतिहार इसे जीतने में सफल रहे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किंतु इसके अनेक बुरे परिणाम सामने आये

- समृद्धि व आर्थिक क्षति हुई
- संसाधनों का व्यय
- स्वयं जीतदार भी ज्यादा सत्ता नहीं कर पाए
- तीनो साम्राज्यो का पतन हो गया
- सामंतों व क्षेत्रीय शक्तियों का उदय
- उनके आपसी संघर्ष से आर्थिक, व्यापारिक क्षति हुई
- नगरीकरण पतन व औद्योगिक रुग्णता की स्थिति
- इन सभी ने विदेशी आक्रमणकारियों को अवसर दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) शताब्दियों तक स्त्रियों की दयनीय सामाजिक स्थिति के लिये ज़िम्मेदार अधिकांश रूढ़िगत प्रथाएँ गुप्त काल में विकसित हुई दिखाई देती हैं। विश्लेषण कीजिये। 15

The centuries old conservative practices responsible for the miserable social status of women appear to have evolved in the Guptas period. Analyze. 15

नारी की स्थिति में वैदिक काल के बाद लगातार गिरावट आती गई। उन्हें संपत्ति अधिकार नहीं थे, धर्म ग्रंथों में उन्हें पुरुषों के अधिनस्थ रहते था तथा नहीं कौटिल्य उन्हें असुर्यम्पश्या कहता है।

गुप्त काल में इस स्थिति में और गिरावट आयी। स्मृति साहित्य में उनके लिए आदर्श प्रस्तुत किया गया किंतु व्यवहार में ऐसा नहीं होता था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* बाल विवाह प्रथा और स्मरण अभिलेख में सती प्रथा का उल्लेख मिलता है
* उच्च वर्ग की महिलाओं को शिक्षा भी दी जाती थी अमरकोष में आचार्या व उपाध्यायिका जैसे शब्द मिलते हैं
* स्मृतियों में विधवाओं पर अनेक प्रतिबंध होने के उल्लेख मिलते हैं
* गणिकाएं सामान्य जीवन का अंग बन चुकी थी वहीं नागरक इनके पास जाते थे
* मेघदूत में उज्जैन के महाकाल मंदिर में देवदासी होने की चर्चा की गई है
* हालांकि पुत्र के अभाव में पति की संपत्ति पर उसका

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अधिकार होता था

* स्त्रीयों को पुराण पढ़ने का अधिकार नहीं था। उन्हें शूद्रो के समान माना जाता था
* पर्दा-प्रथा की शुरुआत भी इसी समय हुई

Feedback

Questions ....

Model Answer & Answer Structure ....

Evaluation ....

Staff ....

Copyright – Drishti The Vision Foundation